जीवन-दर्शन

कवि परिचय – छायावादी कवियों की वृहत् चतुष्टयी में विदुषी कवयित्री महादेवी वर्मा का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है। महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई. में फर्रुखाबाद (उत्तरप्रदेश) में एक सुसम्पन्न परिवार में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा इन्दौर और उच्च शिक्षा प्रयाग में हुई। विद्यार्थी जीवन से ही महादेवी वर्मा ने राष्ट्रीय जागरण की कविताएँ लिखना प्रारंभ कर दिया था; जिसमें व्यापक मानवीय संवेदना की झलक मिलती है। आप प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्य एवं बाद में उपकुलपति भी रहीं। कुछ वर्षों तक आपने उत्तरप्रदेश 'विधान परिषद्' की मनोनीत सदस्य के रूप में भी कार्य किया।

प्राचीन भारतीय साहित्य, दर्शन तथा सन्तयुग के रहस्यवाद के प्रभाव के फलस्वरूप आपकी काव्याभिव्यञ्जना शत् प्रतिशत् भारतीय परम्परा की अनुगामनी रही। वेदना की एकान्त साधिका होने के कारण आपकी रचनाओं में वेदना का मधुर-रस समरसता का आधार बनकर प्रकट होता है।

महादेवी वर्मा मूलतः कवयित्री हैं, किन्तु आपने उत्कृष्ट गद्य लेखन भी किया है। 'स्मृति की रेखाएँ' और 'अतीत के चलचित्र' उनके संस्मरणात्मक गद्य रचना संग्रह हैं। 'शृंखला की कड़ियाँ', 'पथ का साथी', 'मेरा परिवार' और 'क्षणदा' आपके निबंध संकलन हैं। प्रमुख काव्य-संग्रह के रूप में 'नीहार', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'दीपशिखा' और 'यामा' उल्लेखनीय हैं। 'यामा' काव्य कृति पर महादेवी वर्मा को ज्ञानपीठ-पुरस्कार प्राप्त हुआ। भारत सरकार द्वारा आप पद्म-विभूषण की उपाधि से सम्मानित की गईं।

कवि परिचय – हिन्दी साहित्य को आधुनिकता के साँचे में ढालने का प्रमुख श्रेय 'अज्ञेय' को दिया जाता है। उन्होंने कविता, कहानी तथा उपन्यास सभी क्षेत्रों में नवीन शैली का श्रीगणेश किया। आपकी रचनाएँ समसामयिक तथा नई पीढ़ी के लेखकों के लिए मानक-स्वरूप हैं।

आपका जन्म मार्च सन् 1911 ई. में हुआ। आपका पूरा नाम सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय था। आपका बचपन लखनऊ, काश्मीर, बिहार तथा मद्रास में बीता। शिक्षा मद्रास तथा लाहौर में हुई। आप सुप्रसिद्ध लेखक, क्रान्तिकारी विचारक, श्रेष्ठ सम्पादक तथा विदेशों में भारतीय विषयों के ख्याति प्राप्त अध्यापक भी रहे। साहित्य में भाषा और अभिव्यक्ति के आधार पर आपने नए प्रयोग किए; जिसे प्रयोगवाद का नाम दिया गया। इसी शैली के सात नए कवियों की कविताओं के संकलन आपके द्वारा प्रकाशित किए गए जिन्हें 'तार-सप्तक' के नाम से जाना जाता है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में इन तार-सप्तकों का महत्वपूर्ण स्थान है।

अज्ञेय को साहित्य के सर्वोपरि सम्मान 'भारतीय ज्ञानपीठ' तथा 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार प्राप्त हुए। उत्तरप्रदेश संस्थान का 'भारत-भारती' पुरस्कार आपको मरणोपरान्त प्रदान किया गया। हिन्दी साहित्य में आपकी छवि अद्वितीय लेखक के रूप में विद्यमान है। अज्ञेयजी की मृत्यु 1987 ई. में हुई। आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं – 'हरी घास पर क्षण भर', 'बाबरा अहेरी', 'आँगन के पार-द्वार', 'सागर-मुद्रा', 'असाध्य वीणा' आदि।

केन्द्रीय भाव

जीवन–तत्व व्यापक और असीमित है। विचार और भाव के दो किनारों के बीच प्रवाहित होने वाली जीवन–धारा का अपना एक लक्ष्य और अपनी एक गतिशीलता भी होती है। विचार जीवन–व्यवहार को गतिशील और मूल्य बोधी बनाता है। विचार जीवन की चेतना को निरंतर विकसित करने में सहयोग करता है। जीवन में संवेदना का विस्तार करता है और मूल्यों की सर्जना का उत्स भी यही होता है। जीवन–दर्शन में विचार और भाव की चेतना तो है ही जीवन–दर्शन जीवन के बाह्य और आंतरिक जगत को समाज सापेक्ष भूमिका में प्रतिष्ठित भी करता है। काव्य में भाव और विचार का समाहार जीवन–दर्शन की मूल्य चेतना के रूप में ही प्रस्तुत होता है। काव्य में मानवीय चेतना के विकसित संदर्भ ही जीवन–दर्शन को व्यक्त करते हैं। परिवार, समाज और सृष्टि के साथ मनुष्य सामंजस्य तथा मानवीय–बोध की उच्चता को प्राप्त करने का लक्ष्य काव्य के उदार दृष्टि पथ में सदैव महत्वपूर्ण रहा है हिन्दी काव्य में इस लक्ष्य को प्राप्त करने की सदैव चेष्टा की गई है। प्रबंध काव्य और मुक्तक काव्य रचनाओं में सदैव जीवन–निर्माण के तत्वों को समाहित किया गया है।

आधुनिक हिन्दी काव्य में छायावाद के अंतर्गत रचे गए काव्य में जीवन के बाह्य और आंतरिक पक्षों का समावेश है, महादेवी वर्मा के काव्य में जहाँ गहन आध्यात्मिक अनुभूतियाँ हैं वहाँ जीवन–निर्माण की दिशा के अनुसंधान की भी कविताएँ उन्होंने लिखी हैं। प्रस्तुत कविता जीवन में उत्साह को संचारित करने वाली शक्तियों से परिपूर्ण है। भले ही जीवन में संघर्षों का सिलसिला चल रहा हो किंतु इस नाशवान संसार में अपनी पहचान छोड़ जाना ही लक्ष्य होना चाहिए। इस पहचान को स्थापित करने के लिए यद्यपि बहुत सारे ऐसे आकर्षण त्यागने पड़ेंगे जो जीवन को बाँधकर सीमित कर देते हैं। इसीलिए अपने व्यक्तित्व को विस्तार देना जरूरी है और यह विस्तार तभी संभव है जब व्यक्ति को समाज में समर्पित किया जाएगा।

दूसरी कविता अज्ञेय द्वारा रचित है। अज्ञेय जीवन की व्यापकता के आधुनिक कवि हैं। उनके काव्य में जीवन के अनेक रंग उपलब्ध होते हैं, उन्होंने प्रस्तुत कविता में स्पष्ट किया है कि यद्यपि जीवन मरणशील है इसमें पराजय भी है, इसमें गति को कुंठित करने वाले अनेक व्यवधान भी हैं, किंतु इन्हीं सबके बीच ही जीवन की प्रखरता विकसित होती है। संसार एक यज्ञ वेदिका जैसा है – स्वाहा बनकर ही जीवन को निखारा जा सकता है। तप करके ही जीवन में ललकार बनने की चेतना आती है। त्याग और तपस्या को महत्व प्रदान करते हुए कवि ने अनेक प्रतीकों को इस कविता में पिरोया है।

चिर सजग आँखे उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना!

चिर सजग आँखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना!
जाग तुझको दूर जाना!

अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कम्प हो ले,
या प्रलय के आँसुओं में मौन अलसित व्योम रो ले,
आज पी आलोक को डोले तिमिर की घोर छाया,
जाग या विद्युत–शिखाओं में निठुर तूफान बोले,

पर तुझे है नाश-पथ पर चिह्न अपने छोड़ आना!
जाग तुझको दूर जाना!

बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले ?
पन्थ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रँगीले ?
विश्व का क्रन्दन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,
क्या डुबो देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले ?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना!
जाग तुझको दूर जाना।

- महादेवी वर्मा

मैंने आहुति बनकर देखा

मैं कब कहता हूँ जग मेरी दुर्धर गति के अनुकूल बने,
मैं कब कहता हूँ जीवन-मरु नंदन-कानन का फूल बने ?
काँटा कठोर है, तीखा है, उसमें उसकी मर्यादा है,
मैं कब कहता हूँ वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने ?
मैं कब कहता हूँ मुझे युद्ध में कहीं न तीखी चोट मिले ?
मैं कब कहता हूँ प्यार करूँ तो मुझे प्राप्ति की ओट मिले ?
मैं कब कहता हूँ विजय करूँ - मेरा ऊँचा प्रासाद बने ?
या पात्र जगत की श्रद्धा की मेरी धुँधली सी याद बने ?
पथ मेरा रहे प्रशस्त सदा क्यों विकल करे यह चाह मुझे ?
नेतृत्व न मेरा छिन जावे, क्यों इसकी हो परवाह मुझे ?
मैं प्रस्तुत हूँ चाहे मेरी मिट्टी जनपद की धूल बने -
फिर उस धूली का कण-कण भी मेरा गति-रोधक शूल बने!
अपने जीवन को रस देकर जिसको यत्नों से पाला है -
क्या वह केवल अवसाद-मलिन झरते आँसू की माला है ?
वे रोगी होंगे प्रेम जिन्हें अनुभव-रस का कटु प्याला है-
वे मुर्दे होंगे प्रेम जिन्हें सम्मोहन-कारी हाला है।
मैंने विदग्ध हो जान लिया, अन्तिम रहस्य पहचान लिया-
मैंने आहुति बनकर देखा यह प्रेम यज्ञ की ज्वाला है!
मैं कहता हूँ, मैं बढ़ता हूँ, नभ की चोटी चढ़ता हूँ,
कुचला जाकर भी धूली-सा आँधी और उमड़ता हूँ,
मेरी जीवन ललकार बने, असफलता ही असि-धार बने
इस निर्मम रण में पग-पग का रुकना ही मेरा वार बने!
भव सारा तुझको है स्वाहा सब कुछ तप कर अंगार बने-
तेरी पुकार-सा दुर्निवार मेरा यह नीरव प्यार बने।

- अज्ञेय
(पूर्वा से)

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. कवि नाश पथ पर कौन-से चिह्न छोड़ जाना चाहता है ?
2. मधुप की मधुर गुनगुन विश्व पर क्या प्रभाव डालेगी ?
3. तितलियों के रंग से कवि का क्या तात्पर्य है ?
4. कवि के अनुसार काँटे की मर्यादा क्या है ?
5. कवि ने 'मुर्दे होंगे' किसे कहा है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. कवि की आँखे उनींदी क्यों हैं ?
2. ''मोम के बन्धन सजीले'' से कवि का क्या आशय है।
3. 'चिर सजग' का क्या आशय है।
4. कवि ने अन्तिम रहस्य के रूप में क्या पहचान लिया ?
5. कुचला जाकर भी कवि किस रूप में उभरता है ?
6. 'निर्मम रण में पग-पग पर रुकना' किस प्रकार प्रतिफलित होता है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. 'जाग तुझको दूर जाना' से कवि का क्या आशय है।
2. 'पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के रंग रंगीले' में निहित भाव स्पष्ट कीजिए।
3. 'तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना' द्वारा कवि क्या संदेश देना चाहता है ?
4. 'मैंने आहूति बनकर देखा' कविता का मूल भाव लिखिए।
5. प्रस्तुत कविताओं से हमें क्या सीख मिलती है।
6. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या लिखिए -

(क) मैं कब कहता हूँ जग मेरी दुर्धर गति के अनुकूल बने,
मैं कब कहता हूँ जीवन-मरु नंदन-कानन का फूल बने ?
काँटा कठोर है, तीखा है, उसमें उसकी मर्यादा है,
मैं कब कहता हूँ, वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने ?

(ख) विश्व का क्रन्दन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,
क्या डुबो देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले ?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना!
जाग तुझको दूर जाना।

ध्यान दीजिए -

हास्य रस - **''इस दौड़ धूप में क्या रखा आराम करो, आराम करो।**
आराम जिंदगी की कुंजी, इससे न तपेदिक होती है।
आराम सुधा की एक बूँद, तन का दुबलापन खोती है।
आराम शब्द में राम छिपा, जो भव-बंधन को खोता है।
आराम शब्द का ज्ञाता तो बिरला ही योगी होता है।''

स्थायी भाव	- हास्य
आलंबन	- व्यंग्य का पात्र अर्थात् व्यक्ति
उद्दीपन	- व्यंग्योक्तियाँ
अनुभाव	- खिलखिलाना
संचारीभाव	- हर्ष, चपलता, निर्लज्जता

हास्य रस - सहृदय के हृदय में स्थित हास्य नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से संयोग हो जाता है तो वह हास्य रस कहलाता है।

प्रश्न 1. हास्य रस की परिभाषा देते हुए किसी अन्य उदाहरण द्वारा समझाइए।

योग्यता विस्तार

1. महादेवी वर्मा के गीत के अनुरूप ही दो अन्य कवियों की कविताएँ संकलित कीजिए।
2. आपने अपने जीवन का लक्ष्य क्या बनाया है? कक्षा में चर्चा करें।
3. हमारे धार्मिक ग्रंथ हमें जीवन की प्रेरणा प्रदान करते हैं, शिक्षक की सहायता से किसी एक धार्मिक ग्रन्थ के जीवन मूल्यों को सूचीबद्ध करिए।

शब्दार्थ

चिर = पुराना। **व्यस्त** = कार्य में लगा हुआ। **अचल** = पर्वत। **हिमगिरि** = हिमालय, बर्फ का पर्वत। **कम्प** = थरथराना। **अलसित** = आलस्य से भरा हुआ। **आलोक** = प्रकाश। **तिमिर** = अंधकार। **निठुर** = निष्ठुर, कड़े स्वभाव वाला। **क्रन्दन** = पीड़ा से मुक्त, रुदन। **मधुप** = भौंरा। **कारा** = कारागार, जेलखाना।

दुर्धर = कठिनाईयों को पार करने मे सामर्थ्य। **मरु** = मरुस्थल। **प्रासाद** = भवन। **प्रशस्त** = श्रेष, उत्तम। **हाला** = मदिरा, शराब। **असिधार** = तलवार की धार। **वार** = प्रहार, वार करना। **भव** = संसार। **दुर्निवार** = कठिन जिसका निवारण करना कठिन हो।